UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026

शिशु मंदिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 10 | युगाब्द - 5126 | विक्रम संवत् - 2081 | जून - 2024

मूल्यः १२

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-31654408
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
फोन नं. : 9415212142
ईमेल : umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

धर्म के प्रति विश्वास

गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् सभी शिष्य घर लौट रहे थे। शिक्षा तो पूर्ण सभी विषयों की हो गई थी पर धर्म संस्कार की शिक्षा शेष थी गुरु जी ने संस्कार की शिक्षा की योजना बनाई। तीनो शिष्य घर लौट रहे थे, रास्ते में काँटे बिछे थे पहले शिष्य छलांग लगाकर पार कर गया, दूसरा शिष्य बायें से निकल गया, पर तीसरा शिष्य आया वह रास्ते पर पड़े काँटें बीन कर झाड़ी में डालने लगा तभी दोनों शिष्य बोले रात्रि हो रही है चलो चले। तीसरे शिष्य ने कहा रात्रि में जो यात्री निकलेगा उसके पैर में चुभ जायेगा। उसी समय झाड़ी में छिपे गुरु देव आ गये, उन्होंने कहा तीसरा शिष्य पास हो गया, दोनों शिष्यों को पुनः आश्रम ले गये, कहां अभी धर्म एवं सस्कार की शिक्षा आपकी शेष है।

मनुष्य–मनुष्य शत्रु होता है धर्म का अधर्म का अनुगामी बन रहा है

मैं धर्म को नहीं मानता हूँ तभी गुरु ने कहा–यदि आपको लाठी से मार कर घायल कर दे और दूसरा घाव पर पट्टी बाधे तो .....

यही धर्म है अधर्म है दुःख देना नही सभी के धर्म के प्रति विश्वास

हमारे मेधावी छात्र-छात्राएं

UPHIN-11403

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026
प्रेषण डाकघर-रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि- 5,6,7,8

हमारे होनहार छात्र-छात्राएं

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स-22, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ- 226020, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।

प्रकाशन तिथि : 01:05:2024

UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026

शिशु मंदिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 10 | युगाब्द - 5126 | विक्रम संवत् - 2081 | जून - 2024

मूल्यः १२

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-31654408
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
फोन नं. : 9415212142
ईमेल : umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

धर्म के प्रति विश्वास

गुरुकुल में शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् सभी शिष्य घर लौट रहे थे। शिक्षा तो पूर्ण सभी विषयों की हो गई थी पर धर्म संस्कार की शिक्षा शेष थी गुरु जी ने संस्कार की शिक्षा की योजना बनाई। तीनो शिष्य घर लौट रहे थे, रास्ते में काँटे बिछे थे पहले शिष्य छलांग लगाकर पार कर गया, दूसरा शिष्य बायें से निकल गया, पर तीसरा शिष्य आया वह रास्ते पर पड़े काँटें बीन कर झाड़ी में डालने लगा तभी दोनों शिष्य बोले रात्रि हो रही है चलो चले। तीसरे शिष्य ने कहा रात्रि में जो यात्री निकलेगा उसके पैर में चुभ जायेगा। उसी समय झाड़ी में छिपे गुरु देव आ गये, उन्होंने कहा तीसरा शिष्य पास हो गया, दोनों शिष्यों को पुनः आश्रम ले गये, कहां अभी धर्म एवं सस्कार की शिक्षा आपकी शेष है।

मनुष्य–मनुष्य शत्रु होता है धर्म का अधर्म का अनुगामी बन रहा है

मैं धर्म को नहीं मानता हूँ तभी गुरु ने कहा–यदि आपको लाठी से मार कर घायल कर दे और दूसरा घाव पर पट्टी बाधे तो .....

यही धर्म है अधर्म है दुःख देना नही सभी के धर्म के प्रति विश्वास

अपनी बात

आज शिक्षा के बाजारीकरण उपभोक्तावाद और अर्थ आधारित यान्त्रिक पश्चिमी जीवन पद्धति ने शिक्षक को निगल लिया है। इसी कारण आज अनेकानेक समस्याएं उत्पन्न हो गयी हैं। शिक्षक की कोई नहीं सुनता। अनेक आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संकट दिखायी देते हैं।

ऐसे में वर्तमान शिक्षक को अपने आप को भारतीय सनातन शिक्षक के रूप में रूपांतरित करने की महती आवश्यकता है। इसी दृष्टि से भारतीय शिक्षक की विशेषताओं को जानने और तदनुसार आचरण के लिए बार–बार बल दिये जाने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

आदर्श शिक्षक को सबसे पहले आचार्य होना चाहिये। अपने आचरण से विद्यार्थी को जो जीवन निर्माण की प्रेरणा और मार्गदर्शन देता है, वही आचार्य है। आचार्य शासन भी करता है अर्थात् विद्यार्थी को आचार सिखाने के साथ–साथ उनका पालन भी करवाता है।

आचार्य का सबसे बड़ा गुण है उसकी 'विद्या प्रीति'। जो जबरदस्ती पढ़ता है जिसे पढ़ने में आलस्य नहीं आता है। जो पद, प्रतिष्ठा या पैसा (नौकरी) अधिक मिले इसलिए पढ़ता है, उसे आचार्य (शिक्षक) नहीं कह सकते। पढ़ना, स्वाध्याय ज्ञानचर्चा करना आदि का आनंद जिसे भौतिक वस्तुओं के आनंद से श्रेष्ठ लगता हो तथा जो उसी में रमण करता है, वही सही आचार्य है। आचार्य का एक और प्रमुख गुण है उसका 'ज्ञानवान' होना। स्वाध्याय, अध्ययन और चिंतन आदि प्रगल्भ होने से ही मनुष्य ज्ञानवान हो सकता है। बुद्धि को तेजस्वी और निर्मल बनाने के लिए जो अपना आहार–विहार, ध्यान–साधना अशिथिल रखते हैं, वही आचार्य ज्ञानवान होते हैं। ज्ञानवान होने के साथ आचार्य का 'श्रद्धावान' होना जरूरी है। अपने आप में और विद्यार्थी में श्रद्धा होती है, तभी 'विद्यादान' का कार्य उत्तम पद्धति से हो सकता है। इतना ही नहीं एक ओर जहाँ आचार्य में विद्याप्रीति होनी चाहिए, वहीं दूसरी ओर 'विद्यार्थीप्रीति' भी होनी चाहिये। आचार्य को विद्यार्थी अपनी स्वयं की संतान से भी अधिक प्रिय लगते हों अर्थात् मानस संतान लगते हों, विद्यार्थी अपने आराध्य देवता लगते हों, तभी वह उत्तम आचार्य है।

आचार्य कभी विद्या का सौदा नहीं करता। पद, पैसा, मान, प्रतिष्ठा के लिए कभी कुपात्र को विद्यादान नहीं करता। योग्य विद्यार्थी को ही आगे बढ़ाता है। आचार्य को भय, लालच, खुशामद या निंदा का स्पर्श भी नहीं होता।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि एक आदर्श आचार्य में विद्यार्थी परायणता, ज्ञान परायणता, आचार परायणता, धर्म परायणता, समाज परायणता, राष्ट्र परायणता और ईश्वर परायणता' होनी चाहिए तभी वह अच्छा शिक्षक व आचार्य बन सकता है। ऐसा आचार्य समाज का भूषण है। अस्तु एक अच्छे आचार्य के रूप में हम स्वयँ प्रतिष्ठित होकर देश समाज और राष्ट्र का कल्याण कर सकें इन्हीं शुभकामनाओं के साथ यह अंक आप को समर्पित है।

आजादी के इतिहास का वो काला दिन जो कभी भुलाया नहीं जा सकता

—संकलनकर्ता
चन्द्र पाल सिंह

13 अप्रैल 1919 को ये दुखद घटना घटी थी, जब पंजाब के अमृतसर में स्वर्ण मन्दिर से कुछ ही दूरी पर स्थित जलियां वालाबाग में निहत्थे मासूमों का कल्ले आम हुआ था। अंग्रेजों ने निहत्थे भारतीयों पर अंधाधुन्ध गोलियाँ चलाई थीं। इस घटना को अमृतसर हत्याकाण्ड के रूप में भी जाना जाता है।

जलियांवाला बाग में घटित इस घटना को आज पूरे 105 साल बीत चुके हैं लेकिन आज भी इसके जख्म ताजा से लगते हैं। और इस दर्दनाक और दुख से भरे दिन को भारत के इतिहास की काली घटना के रूप में याद किया जाता है। जलियाँवाला बाग भारत की आजादी के इतिहास की वो घटना है जिसके बारे में सोचने पर भी रूह कांप जाती है। जलियांवाला बाग की घटना क्यों हुई थी ?

वर्ष 1919 में रौलेट एक्ट लाया गया तो इसका जोरदार विरोध किया गया। इसी कानून के विरोध में 13 अप्रैल 1919 को वैसाखी के दिन अमृतसर में सभा का आयोजन किया गया तथा जगह चुनी गई भी जलियांवाला बाग। 13 अप्रैल 1919 को वैशाखी का दिन था। वैसाखी वैसे तो पूरे भारत का एक प्रमुख त्यौहार है परन्तु विशेषकर पंजाब और हरियाणा के किसान सर्दियों की रबी की फसल काट लेने के बाद नए साल की खुशियां मनाते हैं। इसी दिन दसवें और अंतिम गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ स्थापना की थी। इसीलिए वैसाखी पंजाव और आस–पास के प्रदेशों का सबसे बड़ा त्यौहार है और सिक्ख इसे सामूहिक जन्म दिवस के रूप में मनाते हैं। अमृतसर में उस दिन मेला सैकड़ों साल से लगता चला आ रहा है था जिसमें उस दिन भी हजारों लोग दूर–दूर से श्री हरमिन्दर साहिब गुरु द्वारे में गुरु जी के दर्शन करने और बैसाखी का त्यौहार मनाने अमृतसर पहुंचे थे। गुरुद्वारे से 500 मीटर की दूरी में जलियांवाला बाग को देखने के लिए बहुत सारे बच्चे, महिलाएं, बूढ़े इकट्ठे हुए थे और बड़ी ही खुशी के साथ बैशाखी का त्यौहार मना रहे थे तभी ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड डायर 90 ब्रिटिश सैनिकों को लेकर वहाँ पहुँच गया। उन सबके हाथों में भरी हुई राइफलें थीं। नेताओं ने सैनिकों को देखा तो उन्होंने वहाँ मौजूद लोगों से शान्त बैठे रहने के लिए कहा।

सैनिकों ने बाग को घेरकर बिना कोई चेतावनी दिए हुए निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। 10 मिनट में कुल 1650 राउण्ड गोलियाँ चलाई गयीं। जलियां वाला बाग उस समय मकानों के पीछे पड़ा एक खाली मैदान था। वहाँ तक जाने या बाहर निकलने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था और चारों ओर मकान थे। भागने का कोई रास्ता नहीं था। कुछ लोगो जाने बचाने के लिए मैदान में मौजूद एक मात्र कुएं में कूद गए पर देखते ही देखते वह कुआँ भी लाशों से पट गया। कथित तौर पर सैकड़ों राउण्ड गोलियाँ चलाई जब तक कि उनका गोला बारूद खत्म नहीं हो गया। यह निश्चित नहीं कि नर संहार में कितने लोग मारे गए लेकिन एक अधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार अनुमानित 379 लोग मारे गए और लगभग 1200 लोग से अधिक घायल हो गए। बाग में लगी पट्टिका पर लिखा है कि 120 शव तो सिर्फ कुएं से ही मिले। शहर में कर्फ्यू लगा था जिससे घायलों को इलाज के लिए भी कहीं ले जाया नहीं जा सका। लोगों ने तड़प–तड़पकर वहीं दम

तोड़ दिया। गोली बारी के बाद पंजाब में मार्शल ला की घोषणा कर दी गई जिसमें सार्वजनिक रूप से कोड़े मारना और अन्य अपमान शामिल थे। जैसे ही गोली– बारी और उसके बाद ब्रिटिश कार्यवाई की खबर पूरे उपमहाद्वीप में फैल गई, भारतीयों का आक्रोश बढ़ गया। बंगाली कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1915 में प्राप्त नाइट हुड का त्याग कर दिया। गाँधी जी शुरू में कार्य करने में झिझक रहे थे लेकिन जल्द ही उन्होंने अपना पहला बड़े पैमाने पर अहिंसक विरोध (सत्याग्रह) अभियान आयोजित करना शुरु कर दिया।

असहयोग आन्दोलन (1920–21) जिसने उन्हें भारतीय राष्ट्रवादी संघर्ष में प्रमुखता प्रदान की। यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था तो वह घटना यह जघन्य हत्याकाण्ड ही थी। माना जाता है कि यह घटना ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की शुरुआत बनी।

❑ सन् 1997 में महारानी एलिजाबेथ ने इस स्मारक पर मृतकों को अद्धांजलि दी थी।

❑ 2013 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरान भी स्मारक पर आये थे। विजिटर्स बुक में उन्होंने लिखा कि –

"ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी।"

स्वामी विवेकानन्द जी का शिकागो भाषण

हम सभी जानते हैं कि जब 1 सितम्बर 1893 ई. को शिकागो में विश्व धर्म संसद के सम्मेलन में भारत का भी सबसे बाद में कुछ समय बोलने के लिए दिया जा रहा था तो अन्तिम समय में सभी व्यक्ति वहां से जाने लगे थे और हमारे भारतीय स्वामी विवेकानन्द जी बोलना प्रारम्भ किये तो उन्होंने कहा– प्रिय भाइयों बहनों,

मैं आपको दुनियां की प्राचीनतम संत परम्परा की ओर से धन्यवाद देता हूँ, मैं सभी धर्मो, सभी सम्प्रदायों एवं लाखों हिन्दुओं की तरफ से धन्यवाद देता हूं। स्वामी विवेकानन्द जी ने संस्कृत का एक श्लोक बोला–

रुचिनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम..
नृणामेको गम्यस्त्वयासि पयसामण्णव इति।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

भारत में फिर से आया नेता सुभाष भइया–2
दुःख, दर्द बढ़ रहे छल–छन्द बढ़ रहे हैं।
आकर अपने बल से इनको मिटा दे।
भारत में .... सुभाष भइया–2

त्रेता में राम आए, द्वापर में कृष्ण आए,
कलयुग बुला रहा है तुमको सुभाष भइया।

भारत में .. सुभाष भइया–2
बीच मंझधार में फंसी है, भारत की आज नैया, आकर के इसे उबारा कोइ नहीं खेवइया।

भारत में .. सुभाष भइया–2
हर'लाल' घुट रहा, घुट–घुंट के जी रहा है।
भारत में . सुभाष भइया–2

पेड़ हमारा जीवन है,
पेड़ हमारे बच्चों के लिए जीवन है,
पेड़ भविष्य की पीढी के लिए जीवन है।

स्वतंत्रता संग्राम के महान सेनानी

क्रांतिकारी ऊधम सिंह

ऊधम सिंह का जन्म दिसम्बर 1899 को पंजाब प्रान्त के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में एक सिक्ख परिवार में हुआ था। 1901 में ऊधम सिंह की माता और 1907 में उनके पिता का निधन हो गया इस घटना के चलते उन्हें अपने बड़े भाई के साथ अमृतसर के एक अनाथालय में शरण लेनी पड़ी। उनके बचपन का नाम शेरसिंह था तथा भाई का नाम मुक्ता सिंह था। अनाथालय में क्रमशः ऊधम सिंह और साधुसिंह के रूप में नए नाम मिले।

अनाथालय में ऊधम सिंह की जिन्दगी चल ही रही थी कि कि 1917 में उनके बड़े भाई का भी देहान्त हो गया। वह पूरी तरह अनाथ हो गए। परन्तु इसके बावजूद भी वह विचलित नहीं हुए। और देश की आजादी तथा जनरल डायर को मारने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए लगातार काम करते रहे। ऊधम सिंह 13 अप्रैल 1919 को घटित जलियांवाला बाग नर संहार के प्रत्यक्ष दशी थे। राजनीतिक कारणों से जलियांवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर ऊधम सिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियांवाला बाग की रक्त रंजित मिट्टी हाथ में लेकर माइकल ओ डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली।

अपने इस उद्देश्य को अंजाम देने के लिए अधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन् 1934 में ऊधम सिंह लंदन पहुंचे और वहीं 9, एल्डर स्ट्रीट कामर्शियल रोड पर रहने लगे। वहाँ उन्होंने यात्रा के उद्देश्य से एक कार खरीदी और साथ में अपना ध्येय पूरा करने के लिए छः गोलियों वाली एक रिवाल्वर भी खरीद ली। भारत का यह वीर क्रान्तिकारी, डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त की प्रतीक्षा करने लगा।

ऊधम सिंह को अपने सैकड़ों भाई बहनों की मौत का बदला लेने का अवसर 1940 में मिला। जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के 21 वर्ष बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसाइटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहाँ माइकल ओ डायर भी वक्ताओं में से एक था।

ऊधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पहुंच गए। अपनी रिवाल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवाल्वर के आकार में उस तरह काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार सरलता से छिपाया जा सके।

बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए ऊधम सिंह ने डायर पर गोलियां दाग दी। दो गोलियां डायर को लगी जिससे उसकी तत्काल मौत हो गयी। ऊधम सिंह ने वहाँ से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला 14 जून 1940 को अधम सिंह को हत्या का दोषी ठहराया गया और 31 जुलाई 1940 को उन्हें पेंटन बिले के जेल में फाँसी दे दी गई।

उत्तर भारतीय उत्तर उत्तराखण्ड के एक जनपद का नाम इनके नाम पर ऊधम सिंह रखा गया है। भारतीय इतिहास में यह अगर क्रान्तिकारी सदैव स्मरणीय एवं वन्दनीय रहेगा।

।। भारत माता की जय ।।

झारखण्ड के वीर सिपाही : बिरसा मुंडा

– मनोज कुमार
प्रांतीय कार्यालय प्रमुख

15 नवंबर 1857 को उलीहातू गाँव (आज के खूंटी जिले) के अंतर्गत जन्म के उपरांत पूजा पाठ की विधि के पश्चात जब नदी में पूजन सामग्री, दोना (पत्ते की कटोरी) बहाया गया तो वह दोना नदी के धार के विपरीत बहने लगा। आश्चर्य के साथ भविष्यवाणी की गई कि एक महान बालक का जन्म हुआ है और यह समाज के लिए महान कार्य करेगा। माता करमी एवं पिता सुगना मुंडा के घर में एक बालक ने जन्म लिया था। नामाकरण बिरसा मुंडा के रूप में किया गया।

बिरसा तीन भाई, दो बहनों के परिवार में चौथे संतान के रूप में था। अत्यंत गरीब परिवार में जन्म लेने कारण पढ़ाई–लिखाई ठीक से नहीं हो सकती थी। बिरसा जंगलों में गाय एवं बकरी आदि चराया करता था। मामा ने अयूबहातू गाँव में जो खूँटी के ही समीप था बिरसा को रखा तथा पास के एक गाँव से सटे गाँव, बरखा में प्राथमिक शिक्षा हेतु इन्हें भेजा। जी.ई.एल. चर्च मिशन का यह स्कूल था। इनके शिक्षक का नाम जयपाल नाग था। बिरसा बचपन से ही मेधावी थे। स्कूल में पढ़ाए गए विषयों का अभ्यास कॉपी कलम के अभाव में बालू पर करते थे। प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई के बाद मिडिल स्कूल में पढ़ाई के लिए उन्हें बुर्जू गाँव के विद्यालय जयपाल नायक के द्वारा भेजा गया। बुर्जू गाँव के समीप ही खटंगा गाँव में अपनी मौसी के घर पर रहकर उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। यहाँ उन्हें इसाई बना दिया गया था। उनका नाम दाउद बिरसा रखा गया। इस समय उनकी आयु 13 वर्ष की रही होगी।

इधर गरीबी एवं अशिक्षा के कारण इनके माता–पिता, भाई–बहन आदि भी जैसे तैसे अपना जीवन यापन कर रहे थे। इन्हें भी इसाई बना दिया गया था। रोजी–रोटी की तलाश में इनके माता–पिता इधर–उधर घूम कर अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। बिरसा के बुद्धि एवं चातुर्य को देखकर बुर्जू मिडिल स्कूल के शिक्षकों ने इन्हें चाईबासा (पश्चिम सिंहभूम) के चर्च के स्कूल में दाखिला दिला दिया। एक दिन छात्रावास में गौ मांस परोसा गया जिसका उन्होंने विरोध किया। उनके प्रचंड विरोध के कारण उन्हें छात्रावास एवं विद्यालय से निकाल दिया गया। निष्कासन के बाद वे अपने घर लौटे तथा मिशनरी से तंग आकर वैष्णव पंडित आनंद पांडे, बंदगाँव के संपर्क में आए। उन्होंने जनेऊ धारण किया, शिखा रखना प्रारंभ किया तथा तुलसी माला एवं चंदन टीका लगाने लगे। पूरा संस्कार ही बदल चुका था। अंदर ही अंदर अंग्रेजों एवं उनकी व्यवस्था के प्रति आग सुलग रही थी।

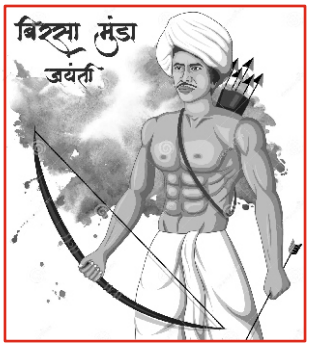

बालक बिरसा ने चर्च की व्यवस्था एवं अंग्रेजों के दमनकारी, शोषणकारी नीतियों को देखा था। साथ ही वह मुंडा समाज के लोगों के साथ साथ अन्य जनजाति समाज के लोगों को भी रूढ़ियों, अंधविश्वास एवं कुरीतियों से निकालकर दूर ले जाना चाहते थे। बिरसा ने चर्च का विरोध किया तथा लोगों को संगठित कर चर्च एवं अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह शुरू कर दिया। पादरियों के द्वारा उनके समाज की निंदा उन्हें काफी आहत करता था। वैष्णव बनने के पश्चात उन्हें हिन्दू धर्म के पुस्तकों एवं ग्रंथों का

अध्ययन करने का अवसर आनंद पाण्डे ने दिया। वह बाइबिल एवं इसाईयत की तुलना हिन्दू धर्म से कर, लोगों के घर वापसी में सहयोगी बने। उनके अनुयायियों की संख्या धीरे–धीरे बढ़ने लगी। अंग्रेज घबरा गए। चूंकि यह सब उनके सरकार के विरूद्ध था अतः बिरसा को पकड़कर सबक सिखाने की योजना बनने लगी। आनंद पाण्डे के साथ उन्होंने अपने जीवन के 3 वर्ष बिताए। उस समय भयंकर अकाल पड़ा था। लोग बीमार हो रहे थे। भूखे मर रहे थे।

जंगल में एक दिन एक घटना घटी जिससे बिरसा पूरी तरह बदल गए। उन्हें आभास हुआ कि उनके अंदर एक अज्ञात शक्ति ने प्रवेश किया है। वह शक्ति स्फूर्ति से भर गए हैं। उन्हें लगा कि उसे कोई मार नहीं सकता। बिरसा ने घोषणा की कि धर्म की पुकार सभी सुनेंगे, "मुंडा जाति ब्रिटिश शासन के विरूद्ध लड़ाई लड़ेगा" बिरसा का नींद एवं चैन सब गायब हो चुका था। मन में अंतर्द्वन्द्व था। स्पप्न में उन्होंने देखा कि धरती माँ सिसक रहीं है। बोल रही है, "अंग्रेज तुम्हारा सब कुछ छीन लेंगे। बाप जैसे अपनी बेटी की रक्षा करता है, तुम भी मेरी रक्षा करो, मुझे अपमानित होने से बचा लो बिरसा"। कहते हैं कि स्वप्न में बिरसा ने एक बूढ़े व्यक्ति को भी देखा था। बिरसा के समझ में आ गया था कि वह कोई और नहीं "हरम होडो" मुंडा समाज का आदि देवता था। एक रात को वर्षा और बिजली के कड़क के बीच बिरसा अपने अनुयायियों के साथ ढोल बजाते हुए अपने घर के पास दोनों हाथ ऊपर किए खड़े हो गए। ढोल नगाड़ा सभी को रात्रि में विचलित कर रहा था। माता करमी दरवाजा खोलती है तो सामने बिरसा को अनेक लोगों के साथ देखा। बिरसा ने वहाँ ऊँचे स्वर में घोषणा की कि, "मैं बिरसा नहीं धरती आबा हूँ, पृथ्वी मेरी संतान है, मैं मुंडा को मरने और मारने सिखाऊँगा" नगाड़ा जोर–जोर से बजने लगा। 1884–85 में लोगों ने बिरसा को धरती आबा यानि पिता स्वीकार कर लिया। बिरसा दुर्भिक्ष के समय बीमार लोगों में जिसको भी छूते थे वह बीमारी से उबर जाते थे। बिरसा के पास जो भी लोग अपनी समस्या लेकर आता था बिरसा उसका समाधान निकालते थे। सिंगबोंगा (सूर्य) पर बिरसा का बहुत विश्वास था। बिरसा ने समाज में धर्म, शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य एवं राजनीति में एक साथ व्यापक क्रांति की घोषणा कर दी। लोगों का विश्कांति और श्रद्धा बिरसा पर बढ़ने लगा। लोग इन्हें भगर्व से बिरसा कह कर बुलाने लगे। आदिवासी अपने परंपराायन–व हथियार चलाने में माहिर होते हैं। कुल्हाड़ी फेंककर वार करना, तीर–धनुष से शिकार करना। तलवार आदि से प्रत्यक्ष आमने–सामने लड़ाई करना। बिरसा ने ऐसे ही निर्भीक, वीर एवं सपूत युवाओं का संगठन अपनी संस्कृति एवं धर्म के अग्रेंजी पर हमला शुरू किया तथा ब्रिटिस के शासन को चुनौति दी। बिरसा के घर पर हथियारों का जमावड़ा शुरु हो गया। इनके दूसरे मित्र भी इस काम में आगे बढ़–चढ़कर भाग लेने लगे। गुरुओं के घर अंग्रेजो के खिलाफ बैठक तथा सभाएँ होने लगौ। पुरोहित खुले विद्रोह पर उतर आए। लोगों में जागृति फैलाने का काम समाज के पुरोहित ने किया। युवाओं की भारी फौज बिरसा के साथ आ गई। आदिवासियों ने भूमि बेदखली साहूकार, जमींदार और अंग्रेजों के खिलाफ जमकर मोर्चा संभाला। बिरसा मुंडा का प्रधान सेनापति था।

वह एटके गाँव, खूँटी के ही समीप का रहने वाले था। उन लोगों ने पहला आक्रमण खूँटी थाने पर किया। उन्होंने गिरजा घरों पर भी आक्रमण कर अंग्रेजों को भयभीत कर दिया। पादरी हॉफमैन ने सरकार को बिरसा के खिलाफ सतर्क कराया। उन्होंने यहाँ तक कहा कि बिरसा ने सभी पादरियों की हत्या की योजना बना रखी है। अंग्रेजी शासन सशंकित होकर रात के अंधेरे में 22 अगस्त 1885 को सोते बिरसा को गिरफ्तार कर लिया तथा उसे साधारण व्यक्ति साबित करने के लिए खूंटी में खुली कोर्ट

लगाने की घोषणा की। बस क्या था ? "धरती आबा" के दर्शन करने अपार जनसमूह एकत्रित हो गई। अंग्रेजों के खिलाफ नारे लगने लगे। कोर्ट नहीं लग पाया। एक तरफा फैसला सुनाकर बिरसा मुंडा को 2 वर्ष की सश्रम सजा सुनाई गई। उन्हें हजारीबाग जेल में रखा गया। 30 नवंबर 1897 को बिरसा मुंडा जेल से वापस आए। जेल से वापस आने के बाद बिरसा ने अनेक गाँवों एवं कस्बों का भ्रमण कर संगठन को खड़ा ही नहीं किया अपितु इसे मजबूती भी प्रदान की।

उन्होंने व्यवस्थित रूप से 'उलगुलान' यानि क्रांति की घोषणा की। उन्होंने डोंबरी पहाड़ी पर सोहराय पर्व से एक सप्ताह पहले ही एक सभा में खानपान, गायन–वादन, नृत्य तथा मेले के बीच ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए शपथ लिया, "आज से मुंडा बालों में कंघी नहीं करेगा। गहना तथा फूल माला नहीं पहनेगा। नाचेगा–गाएगा भी नहीं।" यह था महान त्याग और संपूर्ण उलगुलान की रणभेरी। बिरसा ने घोषणा की अंग्रेजी का शोषण और दमन राज नहीं चलने देंगे। कानून आम लोगों के विकास के लिए होगा। बिरसा के इस उलगुलान से अंग्रेज कांप गए।

सरकारी कार्यालयों, पुलिस थानों तथा अंग्रेज शासक समर्थकों पर बिरसा पंथियों ने अपना हमला तेज कर दिया। अंग्रेजों के द्वारा भी मुंडाओं का भीषण नरसंहार शुरु हुआ। जनवरी 1900 को बिरसा अपने वीर लड़ाकों के साथ डोंबरी पहाड़ी पर एक गुप्त बैठक कर रहे थे। गुप्तचरों द्वारा इसकी सूचना राँची भेजी गई। राँची से अंग्रेज का एक बड़ा अधिकारी हाथी और घोड़ों के साथ बिरसा को पकड़ने चले। अधिकारी बिरसा से वार्ता करना चाहते थे। बिरसा ने बात किए बगैर तीर धनुष से अंग्रेज अधिकारियों पर हमला कर दिया। बिरसा एवं उनके अनुयाई यहाँ से भाग निकले तथा रोगटो जंगल (आज का सारंडा जंगल, पश्चिम सिंहभूम जिले में) चले गए तथा बंदगाँव, पश्चिम सिंहभूम जिले में रहने लगे एवं अपना क्रियाकलाप यहीं से संचालित करने लगे।

कहते हैं पुस्की नाम की औरत ने बिरसा मुंडा के बंदगाँव में छुपे होने की सूचना पादरी को दी। 1900 में बिरसा गिरफ्तार कर लिए गए उन्हें घोड़े से बांधकर घसीट कर ले जाया गया। उनकी हालत बहुत खराब हो गई थी। उन्हें राँची जेल में रखा गया। षडयंत्रपूर्वक बिरसा मुंडा को चिकित्सा सुविधा तथा अन्य सुविधाओं से वंचित रखा गया था। फलस्वरूप 9 जून 1900 को हैजा होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। परंतु लोग ऐसा नहीं मानते। उनका विश्वास है कि बिरसा को भोजन में विष देकर मारा गया।

प्रश्न आज भी है कि, "क्या उलगुलान भ्रष्टाचार, कुरीतियों तथा देशद्रोहियों के प्रति आज बंद हो गई ? बिरसा आज सिर्फ मुंडाओं का ही नहीं वरण समस्त देश प्रेमियों का प्रेरणा स्रोत है। भगवान बिरसा मुंडा के जीवन. से हमें दया, प्रेम, सहिष्णुता, राष्ट्रभक्ति और कठिन परिस्थिति में संघर्ष करने की प्रेरणा मिलती है।

शिक्षा का उद्देश्य : मनुष्य के पूर्णत्व का विकास

– डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

मनुष्य की पूर्णता भारतवासी की स्वभावगत विशेषता है; इसमें कोई व्यवधान न आने पाये, इसके लिए अनादि काल से प्रयत्न होते रहे हैं। चाहे वे 'साहित्य के माध्यम से हुए हों, अथवा ऋषि–मुनियों, साधु–सन्तों के माध्यम से हुए हों; नृत्यनाट्य संगीत नाटक के माध्यम से हुए हों, अथवा स्थापत्य, मूर्तिकला के माध्यम से हुए हों। परिवार, समाज, राष्ट्र, राज्य के माध्यम से भी इसी प्रकार प्रयत्न होते रहे हैं।

पारतंत्र्यकाल में अनेक व्यवधान आये, फिर भी समाज ने उसकी स्वीकृति नहीं दी और निरन्तर प्रयत्न चलते रहे। परन्तु जब मैकाले द्वारा प्रस्थापित शिक्षा पद्धति को ही स्वतन्त्र भारत के प्रधानमंत्री ने स्वीकृति प्रदान की थी, तब कहीं जाकर स्वतंत्रचेता महानुभावों ने पाँच वर्ष की प्रतीक्षा के बाद एक नई शिक्षा पद्धति के सम्बन्ध में विचार–विमर्श किया और उसे प्रथम प्रयोग के रूप में प्रारम्भ किया। जब वह सफल हुआ तो उसने एक संगठन का रूप लिया, जो आज भी विद्या भारती के रूप में लोक–विश्रुत है और संसार के सबसे बड़े संगठन के रूप में अपना निरन्तर गतिशील कार्य कर रहा है; जिसका विदेशों से भी आह्वान किया जा रहा है।

मूलतत्व का ज्ञान करना, मनुष्येतर आचरणों के प्रति सावधान करना विद्या भारती का उद्देश्य है "सा विद्या या विमुक्तये" और प्राण को अजरामर समझकर "विद्ययाऽमृतमश्नुते, अमृतस्य पुत्रावयम्" कर्मक्षेत्र, व्यवहार क्षेत्र, संसार क्षेत्र में उतारना भी विद्या का लक्ष्य रहा है, और उसे आचरण में उतारना शिक्षा का उद्देश्य होता है। विद्या सम्पन्न और शिक्षित हो जाने पर प्रयोग के लिए छात्र को सम्प्रेषित करने की आज्ञा को दीक्षा कहते हैं। दीक्षा देकर ही आचार्य कुछ मूल संकेतों को देकर सूचित करता था, कि यदि कहीं कोई विचिकित्सा उत्पन्न हो जाय तो वहाँ के श्रेष्ठजन जो आचरण करते हों, उसी प्रकार तुम्हें भी आचरण करना चाहिए।" इसे प्रक्रिया से निकला जिज्ञासु, पूर्ण पुरुष बनकर निकलता था और अपनी पूर्णता का विकास करता था और समाज को तदनुरूप व्यवहार की प्रेरणा देता था।

मनुष्य की पूर्णता से तात्पर्य है कि उसमें कहीं पशु प्रवृत्तियाँ तो जन्म नहीं ले रही हैं? उसमें सद्गुणों को ही हमने धर्म के लक्षण कहा है :–

धृतिः क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशंक धर्मलक्ष्णम् ।।

और धर्म को इस प्रकार परिभाषित किया है

'यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः सः धर्मः' जिससे आत्मोन्नति और सर्वकल्याण की सिद्धि हो वह धर्म है। व्यक्ति को मानवीय पूर्णता से जोड़ दिया जाता था। स्वतन्त्र भारत ने इस धर्म पर भी प्रहार किया और Secular शब्द का हिन्दी पर्यायवाची धर्मनिरपेक्षता बना दिया गया। अपने घर में ही गड्डा खोदने की मानसिकता, इन सेक्यूलरवादियों ने अपना ली। जो विद्या और शिक्षा के नितान्त विरुद्ध थी। इसका दुष्परिणाम आज समाज भोग रहा है–हिन्सा, बलात्कार, भ्रष्टाचार, दुराचार आदि–आदि आचरण उभरने लगे।

समाज की जो मान्यता हमारे विद्याविदों ने हमें दी, कि "जहाँ एक व्यक्ति दूसरे अथवा अन्य व्यक्तियों से सम्मान पूर्वक व्यवहार करता हुआ उनके योगक्षेम की चिन्ता करे वही समाज है।" आज बिल्कुल उलट गई है अब समाज जाति, पन्थ, प्रान्त के रूप में संगठित होकर एक दूसरे के उत्पीड़न में

लगे हुए हैं। इसी प्रकार राष्ट्र की परिभाषा भी बदल दी गई और उपभोक्तावादी संस्कृति नहीं, विकृति के चंगुल में फँसते जा रहे हैं। जहाँ एक समर्थ. समाज को, कुटुम्ब को, परिवार को पत्नी, पुत्र तक को अपने सुख का साधन मानकर जी रहा है। जो आज की समस्याएँ हैं।

पूर्ण पुरुष मानव मात्र ही नहीं, जड़–जंगम जगत् से भी सामंजस्य, आत्मीयता का बोध लेकर जीता है। हरे वृक्ष को काटने से उसे पीड़ा होती है, क्योंकि वह उसमें भी आत्मा का बोध करता है। इसीलिए हमारे यहा तुलसी, पीपल, वट, वृक्षों को पूजा गया है। फलदायी वृक्षों से शिक्षा ली है कि वे फल हमारे जीवन के विकास के लिए ही देते हैं, नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं, सज्जन पुरुष भी परोपकार के लिए जीते हैं–"परहित सरस धर्म नहिं भाई"।

जो प्रकृति और पृथ्वी माता की तरह हमारा पोषण करती है उसका संरक्षण हमारा धर्म है। परन्तु इस धर्मनिरपेक्षता ने प्रकृति और पृथ्वी को भी साधन बना लिया है। जो पशु पक्षी किसी से कुछ लेते नहीं सबको कुछ न कुछ देते हैं वे भी आज आहार बनते जा रहे हैं। कामधेनु के समान हमारे सम्पूर्ण इच्छाओं की पूर्ति करने वाली, दूध से हमारा पोषण करने वाली गाय भी हमारा आहार बन गई।

हमने बालकपन से ही पुरुष को ज्ञान से जोड़ा है क्योंकि ज्ञान भी ब्रह्म है–'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म', इसलिए ही बालक को ब्रह्मचारी कहा है। अक्षर–ब्रह्म स्वरूप है इसलिए उसका क्षरः विनाश कभी नहीं होता–"अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।" और अक्षर का स्वभाव अध्यात्म होता है। अध्यात्म से तात्पर्य है सभी जीवों में अपने आपको देखना अर्थात् सभी जीवों के सुख–दुःख को अपना ही सुख–दुःख समझना और सभी जीवों को अपने में देखना अर्थात् जिससे हमें सुख–दुःख की जैसी सुखकारक या कष्टकारक अनुभूति होती है वैसी ही सभी को होती है। ऐसा अनुभव ही अध्यात्म है। कितनी व्यापकता बन जाती है पूर्ण पुरुष में? इसी व्यापकता के लिए हमने परिवार जैसे संबंधों को इनसे जोड़ा था जैसे धरती माता, भारत माता, गंगा मैया, यमुना मैया, तुलसी मैया आदि, प्रमाण के लिए "माता भूमिः, पुत्रोऽहम् पृथिव्याः", मेरी माता पृथ्वी है और मैं इसका पुत्र हूँ। और इसका पुत्र होने के कारण इस पर जन्म लेने वाले सभी मनुष्य मेरे भाई हैं; सहोदर भाई हैं, इसी से वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को जन्म मिला। परन्तु भोगी मनोवृत्ति वाले देशों ने ईश्वर के भी बँटवारे कर दिये और आगे चलकर रिलिजन, मजहब कहकर धर्म के भी बँटवारे कर दिये फिर आगे चलकर मनुष्य के बँटवारे कर दिये और दम्भ लेकर खड़े हो गये काफिरों का विनाश करने के लिए, परन्तु इस विनाश के पीछे वही एकाधिकार छुपा बैठा है, सभी को अपना साधन बनाकर बैठना उद्देश्य बना लिया है और तो और ज्ञान को भी एक पुस्तक के अन्दर बन्द कर बैठा दिया, कि पुस्तक जो कुछ कहती है वही सत्य है शेष सब कुछ झूठ है। इसे मानो, नहीं तो फना कर दिये जाओगे। और उनका रिलिजन या मजहब भी उनके भोग का साधन बन गया।

हमारे यहाँ के पूर्ण पुरुष को ज्ञानार्जन के लिए पूर्ण स्वतंत्रता दी है, जहाँ से भी ज्ञान मिले, ग्रहण करो और ज्ञान की निरन्तर खोज करते रहो, यहाँ प्रतिबद्धता नहीं है, वेद पुराण, उपनिषद्, दर्शन जहाँ से ज्ञान मिले, ले सकते हो, और यदि ज्ञानार्जन की सामर्थ्य नहीं भी है तो महापुरुषों का अनुकरण–अनुसरण करो, करते रहो।

वेदा विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना,
नासौ मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्।
धर्मस्य तत्त्वंनिहितं गुहायां,
महाजनो येन गतः स पन्था।।

यही पूर्ण पुरुष का लक्षण है। पूर्ण पुरुष कभी

खण्डित नहीं होता और न खण्ड–खण्ड होता है। यही भारतीय शिक्षा का उद्देश्य रहा है।

पञ्चतंत्र के निर्माता विष्णु गुप्त ने पशु–पक्षियों के आचरण के माध्यम से राजकुमारों को राजनीति की शिक्षा दी थी। आदिः कवि वाल्मीकि ने क्रोञ्चपक्षी के जोड़े से एक के वध से दूसरे की चीत्कार की व्यथा से आत्मसात् करके ही रामायण की रचना की थी।

पूर्ण शिक्षा "जीओ और जीने दो' के सिद्धान्त पर आधारित है। सभी विनाश कर जीने के सिद्धान्त पर नहीं, इसलिए कि विनाश की प्रक्रिया में स्वयं का जीवित रहना कदापित संभव नहीं। स्वर्ग तक सीढ़ी बनाने का निर्णय लेने वाला रावण जीवित न रह सका और उसकी यहाँ तक स्थिति बन गई कि 'रहा न कुल कोउ रोवन हारा'। सूची (सुई) के आगे की नोंक के बराबर भूमि बिना युद्ध के न देने वाला दुर्योधन अपने सौ भाइयों के साथ भी जीवित न रह सका।

आज के इस सेक्युलरिज्म की देन है परमाणु अस्त्र, परन्तु क्या वे यह सोचते हैं कि सबको नष्ट कर हम ही जीवित रह जायेंगे यह सर्वथा असंभव है क्योंकि मृत्यु पर किसी की भी विजय नहीं हो सकी है। यह हैं पाश्चात्य शिक्षा के अवगुण जो खण्डित मानव की रचना कर रहे हैं।

भारतीय शिक्षा पद्धति अखण्ड पूर्ण मानव की रचना के लिए कार्य कर रही है, जहाँ घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, विनाश का कोई स्थान नहीं। यहाँ–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः,
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

की कल्पना है। सर्वे में केवल भारतीय ही नहीं विश्व के समस्त देशों के मानव आते हैं, पशु–पक्षी भी आते हैं, वृक्ष–वृक्षप भी आते हैं, सरिता–सरोवर भी आते हैं। ऐसी विराट् शिक्षा देती है भारतीय शिक्षा पद्धति।

जिसको देने का संकल्प लिया है विद्या भारती ने। उसके सत्संकल्प के हम भी भागीदार बनें, कैसे बनें, यह आप के ऊपर निर्भर है। यह तो एक यज्ञ कर्म है इसमें आपकी भी आहुति पड़नी चाहिए, वह कैसी हो इसका आप निर्णय करें।

"शुभास्ते पन्थानः सन्तु"

प्रेरक प्रसंग

एक बार की बात है, एक किसान था। जो मौसम क अनुसार अपने फसलें बोता और काटता था। लेकिन वह फिर भी संतुष्ट नहीं था, क्योंकि वह सोंचता था कि यदि ईश्वर चाहे हमारे मन के हिसाब से मौसम रखे तो हम और ज्यादा फसल पैदा कर लेंगे।

एक दिन उसकी किसी भी प्रकार से ईश्वर से भेंट हो गई। उसने कहा 'हे भगवान' यदि आप हमारे अनुसार मौसम कर दें तो हम फसल को ज्यादा पैदा करके अमीर बन सकते हैं तो भगवान ने उसकी बातों को मान लिया और जब वह कहता कि हवा चलाओ, तब हवा चलाते, जब कहता पानी बरसाओ तो वह पानी बरंसाते। धूप खोले तो वह तब धूप खोलते, लगभग उस किसान की सभी बातों का माना, फिर फसल तो बहुत अच्छी उपजी, पक गई फिर जब किसान फसल को काटने गया तो उसने फसल (अन्न) को देखा तो उस पौधे में दाने थे ही नहीं।

इस प्रसंग से हमें यह मालूम होता है कि यदि व्यक्ति या किसी के जीवन में परेशनी नहीं आती है तो वह व्यक्ति कभी भी अपने दम पर प्रसिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता है।

यदि किसी के जीवन में सबसे ज्यादा परिस्थितियां आये तो वह व्यक्ति बहुत ही बड़ी प्रसिद्ध प्राप्त करता है।

छप्पर और तिरपाल बना I.A.S. का मकान

कमल कुमार (संयोजक)
भारतीय शिक्षा परिषद
नेहरू नगर, गाजियाबाद

उत्तर प्रदेश के जनपद बुलन्दशहर में रघुनाथपुर नामक ग्राम में स्व. श्री खजान सिंह के परिवार में श्री मुकेश कुमार महाशय के घर 05 जुलाई 2000 में जन्मे बालक ने उस उक्ति को चरितार्थ कर दिया "होनहार विरवान के होत चीकने पात" श्री मुकेश कुमार महाशय अति सामान्य किसान हैं। दूसरों की खेती बटाई पर लेकर परिवार का भरण पोषण किसी तरह से करते हैं। रात्रि के समय में भजन मण्डली, सत्संग रामचरित मानस का पाठ कर अतिरिक्त आय करते हैं जिससे बच्चों की शिक्षा को बल मिलता है। पत्नी व तीन पुत्रियां दो भैंसों का पालन पोषण करती हैं। सारा दिन उन्ही की परवरिश में गुजर जाता है। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण तीनों बहिनों सें बड़ा भाई पवन कुमार पढ़ने के लिए रूपवास पचगाई उसके मामा के घर भेज दिया गया।

1– जिसने सर्वाधिक Impress किया –

रूपवास पचगाई के T.R. Junior High School से कक्षा 8th पास करने के उपरान्त मामा ने नवोदय की प्रवेश परीक्षा हेतु सभी औपचारिकताएं पूर्ण करायीं और प्रखर बुद्धि का बालक होने के कारण नवोदय विद्यालय की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की, तत्पश्चात विद्यालय में प्रवेश के साथ भोजन आदि से तो मुक्ति मिली ही, साथ ही शुल्क से भी मुक्ति मिली। श्री संजय सोलंकी व श्री मनोज सोलंकी अध्यापकों ने इस मेधावी बालक पवन कुमार को इण्टरमिडिएट की शिक्षा के दौरान न केवल सजग सक्रिय व क्रियात्मक सहयोग प्रदान किया बल्कि पवन कुमार के हृदयतल पर सौम्यता, मधुरता, निष्ठा व लगन की छाप भी स्थाई रूप से छोड़ दी। पवन कुमार आज स्वयं यह कहते हुए गर्व कहते हैं कि मैं उक्त दोनों शिक्षकों से सर्वाधिक Impress हूँ।

2– जब पंखों को उड़ान मिली– माता जी श्रीमती सुमन देवी सीधी सज्जन, सरल व ईश्वर में आस्था रखने वाली कुशल गृहणी हैं। तीनों पुत्री कमशः गोल्डी एवं सृष्टि –M.A. Ist Year तथा सोनिका कक्षा 12th की नियमित छात्रा हैं। पवन कुमार को नवोदय बुगरासी से इण्टरमिडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त पंखों को उड़ान मिलनी प्रारम्भ हो गई। सन् 2017 मे इण्टरमिडिट की परीक्षा 90 % अंकों के साथ उत्तीर्ण की। वह आगे की शिक्षा पूर्ण करने के लिए इलाहाबाद गया। पिता जी ने कहा कि बेटा अपने घर परिवार की स्थिति देखो। मेरा तो बेटा ये सुझाव है कि कोई छोटी मोटी नौकरी करने लगो। परिवार की स्थिति को सुधारने में हाथ बंटाओ। रिश्तेदार व मित्रों का भी यही कहना था । पवन ने बड़े ही विनम्रता के साथ पिता जी से कहा कि मुझे 3 वर्ष का समय दे दो और उसके बाद मुझे मेरे लक्ष्य में सफलता नहीं मिली तो मैं आपके अनुसार काम करना प्रारम्भ कर दूंगा। इसी बीच श्री सोनू मामा ने पवन को ढांढस बंधाया कि चिन्ता न करो चाहें, जो हो मैं तुम्हारी मदद करूंगा। आप केवल कामयाव होकर दिखाओ। मामा ने उसके व्यक्तित्व को, उसकी Positivity को उसके Attitude को उसकी वाकपटुता को ध्येय के प्रति उसकी निष्ठा व लगन को Deeply observe कर लिया था। लक्ष्य की सीढ़ी पर चढ़ते हुये सन् 2020 Graduation उत्तीर्ण किया ।

3– पढ़ने के अलावा और कोई रास्ता नहीं –

मामा द्वारा दी गयी हिम्मत ने पवन को पढ़ने हेतु बल प्रदान किया। मुखर्जी नगर दिल्ली के Hostel में रहने की व्यवस्था की और पढ़ाई में समरस होने लगा। यहीं रहकर सिविल सर्विस की कोचिंग प्रारम्भ की। अब कोचिंग के अलावा उसके पास और कोई Choice नहीं थी। उसने तय कर लिया था कि अब कोचिंग करके अपने आप को चेंज करूंगा। कोचिंग के दौरान ही डी.एम., एस.डी.एम, एस.पी. एस. एस.पी के रूतवे उसे लुभाने लगे। पवन को पढ़ाई में इतना डूबना पड़ा कि वह मांगलिक कार्यक्रम, त्यौहार पर ही घर आता। होली के अवसर पर गांव आना उसे पसन्द नहीं था। मामा के यहां से पिता जी के यहां से हॉस्टिल शुल्क व खर्चे आदि समय से मिलते रहते, कभी देर हो गई तो मित्र सहयोग करते तो कभी पिता तुल्य शिक्षक सहयोग की भूमिका मे दिखाई पड़ते।

4– ग्रेज्युएशन पूर्ण हुई और कोचिंग प्रारम्भ की– पवन कुमार बताते हैं कि मैने कोंचिग के दौरान Five – C's - Five -D's पर काम किया। मैनें हमेशा इन्हीं को अपना हथियार बनाया।

Five - C's -
i- Courage
ii- Commitment
iii- Conception
iv- Curiosity
v- Consistent

Five - D's -
i- Dream
ii- Discipline
iii- Dedication
iv- Devotion
v- Determination

जिज्ञासु रहते हुये प्रतिबद्धता पूर्वक Positive धारणा रख लक्ष्य को चिड़िया की आंख मान निरन्तरता पूर्व लगे रहना मेरी नियति थी। और अनुशासन से आबद्ध होकर भक्तिपूर्वक दृढ़ निश्चय के साथ नयनों में बसे स्वपन को साकार करने के लिए सर्मपण ही मेरा सम्बल बना।

5– मेरा पहला cell phone –

पवन कुमार के अनुसार Graduation करते करते मुझे पहला फोन मिला और उस फोन का प्रयोग मैं केवल Whats App, Google व Instagram का प्रयोग Answer खोजने में किया करता था। Google का प्रयोग मैं Failure I.A.S, I.P.S Videos देखने के लिये किया करता था। 12th Fail नामक पिक्चर भी देखी। घर का ध्यान बार बार आता छोटी बहनें मम्मी बुजुर्ग पिता जी की समय–समय पर अनायास याद आ जाती। उनकी स्थिति परिस्थिति एवं मेहनत को देखकर आंखें भी नम हो जातीं। पापा से Graduation करने के उपरान्त एक वर्ष का समय मांग लिया। मेहनत की, I.A.S की परीक्षा दी, असफलता हाथ लगी, दुःख जरूर हुआ किन्तु निराशा मन में नही आयी। ध्यान में आया Fail First Attempt In Learning.

WhatsApp पर एक Video देखी जिसमें बताया गया कि "गलती करो खूब करो जमकर करो जितनी हो सके उतनी करो बारम्बार करो लेकिन एक गलती को दो बार मत करो। सोचो पहले यह गलती हुई परिणाम ये रहा ये गलती अब दोहराऊंगा नहीं एक दिन तुम अपने Field के Scientist बन जाओगे।

6– I-A-S का मकान व गैस सिलेण्डर –

आज जहां मोदी सरकार ने घर–घर गैस सिलण्डर व चूल्हा उपलब्ध कराया है उसका लाभार्थी ये I-A-S का परिवार भी है किन्तु दुर्भाग्य! कि आज भी माता जी व बहिनें चूल्हे पर रोटी–सब्जी बनाती हैं । जब ये पूछा गया कि गैस नही है, तो सहजता से उत्तर प्राप्त हुआ कि गैस तो है, सिलण्डर को पैसों की कमी होने के कारण भरवा नहीं पाये हैं। मकान के बारे मे जब पूछा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मकान के लिए एप्लाई नही किया ? माता जी ने

बताया कि अधिकारियों ने कहा है कि आपके मकान की दीवार पक्की है और एक कमरे पर लैण्टर भी पड़ा है। पीछे की दीवार तुड़वाकर कच्ची बनवा लो तो मकान स्वीकृत हो सकता है। इसी कारण हमारा Form Cancel हो गया।

7– मैं सक्ष्म हूँ, मैं इसे कर सकता हूँ –

अब पुनः नये सिरे से एक वर्ष पुराने अनुभवों के साथ पिछले वर्ष हुई गलतियों को सामने रखते हुये Passion पूर्वक एकाग्र होकर तैयारी में लग गया और UPSC की परीक्षा द्विगुणित उत्साह के साथ पूरी तरह आत्मविश्वासी होकर दी और ईश्वर के प्रति आस्था आप सबकी संवेदना व सहानुभूति ने 239वीं रैंक के साथ I-A-S बना दिया। 16 अप्रैल 2024 रात्रि 1:30 बजे परिणाम घोषित हुआ। सभी स्थानों पर विडियो वायरल हो गयी। सुबह होते–होते पत्रकार मेरे घर तक आ पहुंचे। मेरे घरवालों को इतनी बड़ी पब्लिसिटी का एहसास भी नहीं था। वे नहीं जानते I-A-S, D-M-, S-D-M क्या होता है ? क्या पावर है उनकी ? मैं परिणाम के आने के तीन घण्टे बाद तक लगभग शून्यता की स्थिति में रहा। मुझे कुछ कहते नहीं बन रहा था। मुझे स्वंय अपनी सफलता पर विश्वास नहीं हो रहा था। फिर क्या था फोन पर बधाईयों के तांते लग गये। अगले दिन ही मेरी सफलता पर इलाहाबाद Hostel में Program हुआ। फिर मामा जी के यहां रूपवास पंचगाई गया। उसके बाद अगले दिन सुबह सुबह मेरे गांव रघुनाथपुर से एक दर्जन कार, ट्रैक्टर–ट्राली व डी.जे. के साथ ग्रामवासी पहुंच गये। यह कहते मुझे खुशी है कि मेरे ऐसे अनेक रिश्तेदार, सम्बन्धी जो हमारी घर की हालत को देख कर वर्षों पहले किनारा कर गये थे। आज उनके द्वारा बधाई शुभकामनायें व मिठाई प्राप्त हो रही हैं। आज गांव पहुंचकर बहुत उत्साह, उमंग व जोश–खरोश के साथ मेरा स्वागत व सम्मान किया गया । मैं नौजवान पीढ़ी को अपने कनिष्ठ भाई बहिनों को इस अवसर पर यही संदेश देना चाहूंगा कि यदि ईश्वर के प्रति सच्ची आस्था, कर्म के प्रति निष्ठा, लगन, स्वंय पर विश्वास तथा दिल मे जूनून (Passion) हो, तो जो आप चाहेंगे उसे प्राप्त कर सकेंगे। मुझे गर्व है कि एक गरीब, मजदूर किसान का पुत्र समाज की भवनाओं को समझते हुये न्याय कर सकेगा ।

दोस्तों ! प्रतिभा किसी के बाप की बपौती नहीं है। Five- C और Five- D को ध्यान में रख कर, मन में जुनून सवार हो तो यह गरीब के घर भी पैदा हो सकती है ।

पास नहीं कुछ भी देने को,
मैं अपना यौवन देता हूँ।
बेवस मजदूर, किसानों का दुःख,
निज कन्धों पर लेता हूँ।।

जमुहाई

जब निंदिया रानी चुपके से
आँखों को झपकाती,
बार–बार तब मुँह खुल जाता
जमुहाई आ जाती।

लंबी–चौड़ी भाषण बाजी
हमें बोर कर जाती,
धीरज तब जवाब दे जाता
और उबासी आती।

जब हम गिटपिट बातें करते
माँ लेती जमुहाई,
लेते हुए उबासी, उठकर
चल देती हैं ताई।

दादाजी मुँह बड़ा सा
लें लंबी जमुहाई,
लगता मानो खुल जा सिम सिम
लेता हो अंगड़ाई।

सर्वप्रिय नेतृत्व के आदर्श भगवान शिव

—डॉ. कृष्णगोपाल मिश्र

भगवान शिव सर्वप्रिय देवता हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने उन्हें जगत्वन्ध कहा है –

'संकर जगत् वन्द्य जगदीसा' अर्थात् भगवान शंकर संसार के स्वामी हैं और समस्त 'संसार' उन्हें वंदनीय मानता है। देवता, मनुष्य, ऋषि मुनि सब उन्हें नमन करते हैं। यहाँ प्रयुक्त 'सब' शब्द में देवताओं, मनुष्यों और साधारण मनुष्यों से अधिक अलौकिक शक्ति सम्पन्न मुनियों के साथ यक्ष, किन्नर, नाग, असुर आदि अन्य जातियाँ भी समाहित हो जाती हैं। भगवान शिव जगत वंद्य होने के कारण सबके प्रिय आराध्य हैं। इस संदर्भ में विचारणीय प्रश्न है कि जब देवता और दैत्य परस्पर शत्रु हैं तब देवाधिदेव महादेव दैत्यों के लिए भी वंदनीय क्यों हैं ? दैत्य वरदान प्राप्ति के लिए सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा की शरण में जाते हैं। उनकी तपस्या करते हैं किन्तु उनकी पूजा नहीं करते। दैत्य विष्णु से कभी कोई याचना नहीं करते परन्तु शिव के समक्ष सदा नतमस्तक मिलते हैं। शिव की इस सर्वप्रियता का रहस्य उनकी कल्याणकारी शक्ति और त्यागपूर्ण सरलता में निहित है। नेतृत्व यदि सर्वप्रिय होना चाहे तो उसे भी शिव के समान सहज सुलभ और सबके प्रति कल्याणकारी बनना चाहिए।

'शिव' का एक अर्थ 'कल्याण' भी है। कल्याण सब चाहते हैं– देवता भी और दैत्य भी। अतः शिव के भक्त सभी हैं। कल्याण–कामना से किसी का विरोध नहीं होता। इसलिए शिव से भी किसी का विरोध नहीं है। शिव वैदिक–पौराणिक देवता होने के साथ लौकिक घरातल पर भी एक ऐसे नेहूत्व का प्रतीकार्थ देते हैं जो सबका भला चाहता है, सबका भला करता है, सबके लिए सुलभ है और भोला–भंडारी है। जो वीतरागी है, संन्यासी है, जिसका अपना अपने लिए कुछ नहीं, अपना सब कुछ सबके लिए हैं। जो समन्वय की सामर्थ्य से युक्त है और विरोधों में सामंजस्य बैठाना जानता है, जिसे अपयश, अपमान एवं निन्दा का विष पीना–पचाना और समाज के लिए घातक भयानक विषधरों को वश में करना आता है। ऐसा ही व्यक्तित्व शिव हो सकता है, लोक के लिए शुभ हो सकता है जो सर्वप्रिय तथा जगतबंध बन सकता है। शिव के कंठ में, भुजाओं में नाग लिपटे हैं। नाग संसार के लिए भयकारी हैं किन्तु जब वे शिव के नियन्त्रण में उनकी देह पर मालाओं के समान शोभायमान होते हैं तब लोक के लिए भय का कारण नहीं रह जाते। लौकिक संदर्भ में नाग अपराधी ताकतों के प्रतीक हैं। लोक के कल्याण के लिए इनका नियंत्रण आवश्यक है। शिव वही हो सकता है जो इन पर नियंत्रण कर सके। नेतृत्व की शिवता शिव जैसी नियन्त्रण–शक्ति की अपेक्षा करती है।

शिव को त्रिलोचन कहा गया है। दो नेत्र तो सबके पास हैं सब उनसे देखते हैं, अनुमान लगाते हैं और निष्कर्ष निकालकर कार्य करते हैं किन्तु शिव ज्ञान के तृतीय नेत्र से देखकर विचार करते हैं। सही निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए ज्ञान के तृतीय नेत्र का सदुपयोग शिव–नेतृत्व की परम उपलब्धि है। ज्ञान का यही तृतीय नेत्र लोक–कल्याण के लिए आवश्यकता पड़ने पर रुद्र रूप धारण कर अशिव शक्तियों के संहार का कारण भी बनता है। समाज की सुरक्षा के लिए नेतृत्व के तीसरे नेत्र का संहारक रौद्ररूप लेना और उसकी कल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में उसका विचार सम्पन्न ज्ञान रूप में परिणत होना आवश्यक है। भगवान शंकर के इस तीसरे नेत्र का रहस्य समझकर ही कोई नेतृत्व समाज

को समृद्धि और सुरक्षा देकर सर्वप्रिय बन सकता है। लच्छेदार बातों और कोरे वादों की बौछारें समाज को बहका सकती हैं, बहला सकती हैं, उसे रिझाकर वोट बटोर सकती हैं लेकिन समाज का भला नहीं कर सकतीं।

शिव की देह पर लगी भस्म का अंगराग उनकी निष्कामता, निर्लोभता और निर्लिप्तता का प्रतीक है। सर्वप्रिय बनने के लिए उत्सुक नेतृत्व को व्यक्तिगत सुख–सुविधाओं और वैभवपूर्ण प्रदर्शनों की विलासप्रियता पर अंकुश लगाना चाहिए। निजी महत्वाकांक्षाएँ नेता को इंद्र बना सकती हैं, शिव नहीं और इन्द्र कभी सर्वप्रिय नहीं हो सकते। इंद्र व्यवस्था चला सकते हैं किन्तु समाज पर आयी विपदाओं के निवारण के लिए सक्षम नहीं हो सकते। इस कार्य के लिए उन्हें शिव आदि अन्य शक्तियों की शरण में आना पड़ता है। नेतृत्व का इन्द्र बन जाना समाज के लिए शुभ नहीं होता। समाज की शुभता तो शिवता की विलासिता विहीन भस्मरागमयी भूमि में ही विलसती है।

> शिव अर्थात् कल्याण के लिए शक्ति चाहिए, सामर्थ्य चाहिए। शक्ति दो प्रकार की है–बुद्धि की और देह की, शास्त्र की और शस्त्र की। दोनों ही प्रकार की शक्तियाँ शिव की दो संतानों के रूप में उनकी वशवर्ती हैं। गणेश और कार्तिकेय के रूप, गुण और कार्य में इन शक्तियों की प्रतीकात्मकता के दर्शन होते हैं।

भगवान शिव नित्य शुद्ध हैं। शुद्धता का संधारण मन, वाणी और कर्म से होता है। शिव की कथाओं में कोई प्रसंग ऐसा नहीं मिलता जब उन्होंने कहीं किसी से कोई छल किया हो। समाज का नेतृत्व करने वाला व्यक्ति भी यदि शुद्ध हो, छल–फरेब न करे, झूठ न बोले तो उसकी विश्वसनीयता समाज में स्वतः बढ़ जाती है तब उसकी सर्वप्रियता का पथ प्रशस्त होने लगता है। नेतृत्व की शुचिता समाज में भी सकारात्मक प्रभाव उत्पन्न करके समाज से भ्रष्टाचार दूर कर सकती है। लोकजीवन में आचरण की पवित्रता नेतृत्व के शिवत्व की शुचिता पर निर्भर है। शुद्धता के अभाव में सामाजिक लोकप्रियता संभव नहीं।

निजी आवश्यकताओं में न्यूनता शिव का आदर्श है। अन्न, वस्त्र और आवास लोकजीवन की अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं। शिव सबके लिए इन आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। शिव की पत्नी भगवती पार्वती का एकनाम अन्नपूर्णा भी है। माता अन्नपूर्णा शिवगृह में उपस्थिति सबका पेट भरने की गारंटी है। अन्नपूर्णा सुख समृद्धि देकर लोक में वस्त्र और आवास की लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति का भी प्रतीकार्थ हैं। शिव और अन्नपूर्ण की यह पौराणिक युति नेतृत्व और नीति में सामंजस्य को संकेतिक करती है।

लोक का कल्याण चाहने वाले नेता की नीति ऐसी होनी चाहिए जो सबकी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। स्वयं शिव इन अनिवार्यताओं से भी परे हैं। वे दिगम्बर हैं, उन्हें अन्न और आवास भी नहीं चाहिए। वस्त्र के नाम पर बाघम्बर, भोजन के लिए बिल्वपत्र–भाँग–धतूरा और आवास के लिए कैलाश अथवा श्मशान। शिव से संदर्भित ये उपादान संकेतित करते हैं कि सर्वप्रिय होने के लिए त्याग का निर्वाह परम आवश्यक है। नेता को अपने लिए वे सुविधाएँ भी नहीं चाहिए जिनकी व्यवस्था वह अन्य के लिए अनिवार्य रूप से करता है।

शिव का विषपान लोककल्याण के लिए आवश्यक शर्त है। अमृत सब चाहते हैं, विष कोई नहीं चाहता। यश की. अभिलाषा सब करते हैं किन्तु लोक की भलाई के लिए अपयश स्वीकार करने को कोई विरला ही तैयार होता है। जो नेता निर्भय होकर समाज के कल्याण के लिए अपमान और अपयश का

विष पचा जाता है, वही सर्वप्रिय बन पाता है। समाज को नेतृत्व के लिए सदा शिव की प्रतीक्षा रहती है क्योंकि शिव ही स्वयं विष पीकर औरों को अमृत प्राप्त करने का अवसर प्रदान करते हैं।

शिव करुणावतार हैं। अतः नेता को भी करुणा से समृद्ध होना चाहिए जब तक नेतृत्व में जनता के प्रति करुणा का कोमल भाव नहीं होगा. तब तक वह उसके दुःख दूर करने के लिए सच्चे प्रयत्न भी नहीं कर पाएगा। शिव की भाँति करुणा करके सबकी पीड़ा हरने वाला नेता ही सबका प्रिय बन सकता है। आज अभावों से जूझती, असुरक्षित अनुभव करती डर–डर कर जीती जनता अपने नेताओं से करुणा की आशा करती है।

विरोधों और विषमताओं के बीच समन्वय और सामंजस्य स्थापित करने की संज्ञा ही शिव है। शिव–परिवार में उनके पुत्र कार्तिकेय का वाहन मयूर शिव के कंठ में पड़े नाग का घोर शत्रु है। शिवपत्नी पार्वती का वाहन सिंह शिव के वाहन नंदी का विरोधी है, फिर भी शिव परिवार में सब साथ–साथ हैं, सुखी हैं और अपने–अपने कार्य में व्यस्त हैं। विरोधों में सामंजस्य की यही सामर्थ्य शिव– नेतृत्व के माध्यम से समाज में संघर्ष का शमन कर सकती है।

शिव अर्थात् कल्याण के लिए शक्ति चाहिए, सामर्थ्य चाहिए। शक्ति दो प्रकार की है– बुद्धि की और देह की, शास्त्र की और शस्त्र की। दोनों ही प्रकार की शक्तियाँ शिव की दो संतानों के रूप में उनकी वशवर्ती हैं। गणेश और कार्तिकेय के रूप, गुण और कार्य में इन शक्तियों की प्रतीकात्मकता के दर्शन होते हैं।

इस प्रकार शिव सर्वप्रिय नेतृत्व के लिए आदर्श प्रतिमान हैं

आज लोकतांत्रिक व्यवस्था में लोक के नेतृत्व का सूत्रधार वही बन सकता है जो सर्वप्रिय हो, सर्वप्रिय न भी हो तो बहुप्रिय अवश्य हो। नेतृत्व की बहुप्रियता शिव की सर्वप्रियता के अनुकरण में ही संभव है। यदि हमारे नेता भगवान शिव के गुणों का अनुसरण करें तो वे भी सर्वप्रिय और जगतवन्ध बन कर सबका कल्याण कर सकते हैं।

विभागाध्यक्ष–हिन्दी, शास. नर्मदा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नर्मदापुरम् (म.प्र.)

एकता में ही शक्ति है, फूट से ही विनाश होता है

एक जंगल में चार गायें रहती थीं। उनमें गाढ़ी मित्रता थी। वे चारों हमेशा साथ–साथ रहती थीं। कभी कोई जंगली जानवर उन पर हमला करता, तो वे चारों मिलकर उसका सामना करतीं और उसे मारकर भगा देती।

उसी जंगल में एक बाघ भी रहता था। उसकी नजर इन गायों पर थी। वह गायों को मारकर खा जाना चाहता था। लेकिन उनकी एकता देखकर उन पर हमला करने की उसकी हिम्मत नहीं होती थी।

एक दिन गायों में आपस में झगड़ा हो गया। वे एक दूसरे से नाराज हो गयीं। उस दिन हर गाय अलग–अलग रास्ते से जंगल में चरने गयी। बाघ तो बहुत दिनों से इसी ताक में बैठा था। उसने एक–एक कर सभी गायों को मार डाला और उन्हें खा गया।

एकता में ही शक्ति है।

प्रतिरोधी रसायन - हल्दी

भारत देश मसाला उत्पादन में प्राचीनकाल में अग्रणी रहा है। इस देश की भूमि पर अनेक प्रकार के मसालों की फसल जैसे काली मिर्च, धनियाँ, अजवायन, अदरख, जावित्री, तेजपत्र दालचीनी अधिक मात्रा में उगाए जाते हैं। हल्दी मसालों में भारत की धरोहर है। विश्व के कुल उत्पादन का 10 प्रतिशत भाग भारत उत्पादित करता है। भारत में हल्दी की खेती करने वाले प्रदेश– मध्य प्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक, बिहार, आंध्र प्रदेश तमिलनाडु, महाराष्ट्र, असम तथा केरल हैं।

औषधीय गुण - इसमें कैंसर रोधी गुण विद्यमान हैं। इसका प्रयोग भोजन में आदिकाल से होता आ रहा है। भोजन में इसका प्रयोग मनुष्य के लिए कल्याणकारी होने के साथ कैंसर जैसे भयानक रोग से रक्षा करता है। इसमें कीटाणुनाशक क्षमता होती है। चर्म रोग में इसका प्रयोग बहुत ही लाभकारी होती है। मांगलिक अवसरों हल्दी का इस्तेमाल भारत में मुख्य रूप से किया जाता है। घरेल चिकित्सा पद्धति में इसका प्रयोग बहुत ही उपयोगी माना जाता है इसमें रक्तशोधन गुण होता है। इसके उपयोग से उदरशूल चर्मरोग, स्त्री रोग की अनियमितता ठीक हो जाती है।

विभिन्न रोगों में हल्दी से लाभ- खांसी–जुकाम में गरम दूध के हल्दी चूर्ण मिलाकर सेवन से लाभ होता है। खांसी (कास) में हल्दी को सेंककर रात को शयनकाल के समय चबाकर खानी चाहिए खुजली एवं दाद में हल्दी के चूर्ण में मक्खन मिलाकर रोगग्रस्त भान पर लगाने से लाभ होता है। चोट लगने के पश्चात रक्त जम जाने पर हल्दी तथा नमक गरम कर लेप करने से लाभ होता है। चोट लगने के कारण होने वाली सूजन पर हल्दी तथा चूने का लेप करना चाहिए। रक्तपित्त रोग में ताजी हल्दी गरम दूध में मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है। खाज एवं कुष्ठ रोग में हल्दी का चूर्ण गोमूत्र में मिलाकर लगानी चाहिए। प्रतिश्याय श्लेष्मा में हल्दी के को रात के समय सूंघने से लाभ होता है एवं इसके पश्चात समय तक जल का सेवन वर्जित है।

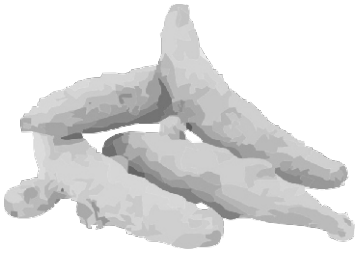

भारत में हल्दी की खेती विश्व में हल्दी का 10 प्रतिशत उत्पादन भारत में किया जाता है। वर्तमान में 151000 हक्टेयर भूमि में इसकी खेती भारत में की जाती है। जिसमें 350000 टन हल्दी प्राप्त होती है। इसमें से 15000 टन का निर्यात विश्व के अन्य देशों में होता है। भारत को इसके निर्यात से 50 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित होती हे। खेती के लिए उपयुक्त जलवायु गरम तथा अधिक आर्द्रता वायु खेती के लिए सबसे अधिक उपयुक्त होती है। भूमि–बलुई दोमट मिट्टी, कार्बनिक पदार्थ की उचित मात्रा, जल निकास की उचित व्यवस्था है।

बुवाई-हल्दी की बुवाई का सबसे उपयुक्त 15 मई से 30 जून के का होता है। बुवाई से पूर्व खेत में जुताई करवाकर हर बार व चलाकर मिट्टी का भुरभुरा बनाते हैं। भारी जमीन में पेड़ नकर हल्की मिट्टी में समतल पर ही कन्दो की बुवाई की जा कती है। बुवाई से पूर्व स्वस्थ कन्द (20–30 ग्राम वजन) को कि फफूंदीनाशक से उपचारित करना आवश्यक होता है। रोपाई के समय पंक्ति से पत्ती की दूरी 30 से.मी. एवं केन्द्र से केन्द्र की ही 20 से.मी. होनी चाहिए।

कन्दों को 8–10 से.मी. की गहराई कही रखा जाता है।

खाद- इसकी खेती में खाद का उपयोग अतिआवश्यक तथा महत्वपूर्ण है। प्रति हेक्टेयर 10–15 टन सड़े हुए गोबर की बाद या कम्पोस्ट खाद का प्रयोग किया जाना चाहिए। खुली छोड़ी गोबर की खाद कदापि प्रयोग न करें। गोबर की खाद के अतिरिक्त कार्बनिक खादों का प्रयोग प्रति हेक्टेयर निम्न मात्रा में करना आवश्यक माना गया है–ओसमोकोट 200 कि.ग्रा., बायो स्वर 200 कि.ग्रा., इकोसोल 100 कि.ग्रा., माईक्रोमोल 10 कि.ग्रा., बर स्टार 18 कि.ग्रा.।

बुवाई के पश्चात पश्चात कन्दों का टंकना- नमी बनाए रखने के लिए कन्द्रों को बुवाई के पश्चात पत्तों द्वारा ढंका जाता है। जिसके कारण कन्द्रों का जमाव अच्छा होता है। हल्दी की खेती के साथ एरण्ड की खेती भी. लाभकारी है। चार वर्ग मीटर प्रति पौधे के हिसाब से एरण्ड की बुवाई करनी चाहिए। इसमें भूमि में नमी बनी रहकर किसान को मस्त लाभ मिलता है।

मक्खी , मकड़ी से नियन्त्रण- कभी–कभी कन्दों पर मक्खी तथा मकड़ी, मक्खियाँ काटने वाले कीडों का प्रकोप होता है। कुछ क्षेत्रों में कन्द के झड़ने का प्रश्न रहता है। तब ऐसी दशा में निम्नानुसार उपचार करना चाहिए।

- फफूंदीनाशक तथा जैविक दैनिक खाद से कन्दों का उपचार कर इनकी बुवाई करनी चाहिए।
- भूमि के कार्बनिक तत्वों की मात्रा बनाए रखें।
- प्लॉट हारमोन्स फफूंदीनाशक तथा जैविक कीटनाशकों का प्रयोग करें।

समझदार मेढ़क

एक गाँव था। उसके बाहर एक छोटा सा तालाब था। उस तालाब में एक मेढ़क रहता था। वह रोजाना कुछ समय के लिए तालाब से बाहर आकर धूप में बैठकर टर्राया करता था।

एक दिन की बात है, एक चील तालाब के ऊपर से उड़ती हुई जा रही थी। अचानक उसकी नजर मेंढक पर पड़ी। मेढ़क ने भी चील को देख लिया और पानी में कूद गया।

थोड़ी देर बाद मेढ़क ने पानी के ऊपर आकर इधर–उधर देखा। उसे कुछ नजर नहीं आया। निश्चिंत होकर वह फिर पानी से बाहर धूप में आ बैठा। परन्तु वह धूर्त चील पास ही के पेड़ पर छिपी बैठी थी। वह चुपके से उड़ती हुई वहाँ आई और मेढ़क को पकड़ लिया। परन्तु मेढ़क घबराया नहीं। वह बोला 'चील बहिन ! मुझे खाने से पहले मेरी बात सुन लो, फिर बड़े चाव से खाना। मेरा शरीर कीचड़ में सना हुआ है। कीचड़ भरा मेढ़क खाकर तुम्हारे पेट में दर्द हो जायेगा। तुम चाहो तो पहले मैं, इसे धो लूँ। चील की समझ में बात आ गयी। उससे कहा 'ठीक है' चील ने मेंढ़क को छोड़ दिया।

मौका मिलते ही मेढ़क ने तालाब में छलांग लगा दी। वह बोला– 'चील बहिन! सोच–समझकर काम करना सीखो।' इस प्रकार मेढ़क की जान बच गयी। शिक्षा–'मुसीबत में धबराना नहीं चाहिए।'

ईश्वर भक्त बालक प्रहलाद

लव-कुश, ध्रुव, प्रहलाद बनें हम, मानवता का त्रास हरें हम।

हम सब नित्य प्रति अपनी वन्दना में लव, कुश, ध्रुव, प्रहलाद बनने की कामना करते हैं। हमारे धार्मिक पौराणिक ग्रन्थों में ध्रुव, उपमन्यु, आरुणि, श्रवण कुमार, भक्त प्रहलाद जैसे महान बालकों की कथाएं हैं।

भक्त प्रहलाद दैत्यराज हिरण्यकश्यप का पुत्र था। उनकी माँ का नाम कयाधु था। हिरण्यकश्यप ने तपस्या करके भगवान ब्रह्मा से वरदान मांग लिया कि वह न रात में, न दिन में, न धरती पर, न आकाश में, न ही किसी अस्त्र–शस्त्र से न पशु और न मनुष्य द्वारा मारा जाये। इससे उसे लगा कि वह अमर हो चुका है। हिरण्यकश्यप को अहंकार हो गया और देवताओं को परेशान करने लगा। वह स्वयं को साक्षात् ईश्वर समझने लगा और अपने राज्य में भगवान की पूजा अर्चना और भक्ति करने पर रोक लगा दी किन्तु उसका ही पुत्र प्रहलाद भगवान विष्णु का अनन्य भक्त था। वह सदैव हरि विष्णु का भजन करता था तथा अन्य लोगों को भी भगवान की भक्ति करने के लिए प्रेरित करता। हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को गुरुओं के पास अध्ययन के लिए भेजा। वहां भी प्रहलाद भगवान विष्णु का भजन व उनकी भक्ति करता था। गुरुओं के बहुत समझाने के बाद भी उस बालक ने भगवान की भक्ति करना नहीं छोड़ा बल्कि उसकी भक्ति और दृढ़ होती गयी।

बालक प्रहलाद की हरि विष्णु के भक्ति की परीक्षा लेने के अनेक सवाल पूंछे गये। किन्तु प्रहलाद एक ही बात कहता रहा कि सबसे श्रेष्ठ भगवान विष्णु हैं इसलिए मैं उनकी पूजा अर्चना और भक्ति करता हूँ। हिरण्यकश्यप के लाख समझाने के बाद भी वह हरि विष्णु की भक्ति से तनिक भी नहीं डिगा। इससे क्रोधित होकर हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को अनेक यातनाएं देने लगा। यहाँ तक कि उसे मारने तक आदेश दे दिया। उसे मारने के लिए पागल हाथी के पाँव के नीचे कुचलवाने का प्रयास किया गया। हिरण्यकश्यप की एक बहिन थी होलिका। उसे आग में न जलने का वरदान मिला हुआ था। उसके पास वरदान वाली चुनरी थी जिसे ओढ़ लेने से उस पर आग का प्रभाव नहीं पड़ता था। एक दिन उसने प्रहलाद को गोद में लेकर लकड़ी के ढेर पर बैठ गयी और आग लगा दी गई। किन्तु ईश्वर की कृपा से उसी समय तेज हवा चली और होलिका की चुनरी प्रहलाद के ऊपर आ गई। इससे प्रहलाद तो जलने से बच गया किन्तु होलिका जलकर राख हो गयी। तभी से भक्त प्रहलाद के बचने की खुशी में होली का त्योहार मनाया जाता है।

अन्त में हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को खम्भे में रस्सी से बँधवाकर मारने के लिए तलवार निकाली और गरजकर कहा, "कहाँ है तेरा भगवान।" इस पर प्रहलाद ने कहा, "पिताजी, भगवान तो हर जगह है, कण–कण में हैं, मुझमें भी और आपमें भी, यहाँ तक कि इस खम्भे में भी। इससे क्रोधित होकर हिरण्यकश्यप ने खम्भे पर जोर से प्रहार किया और खम्भा फट गया। उसमें से उसी समय नरसिंह भगवान प्रकट हुए। उनका आधा शरीर मनुष्य का और आधा शेर का था। नरसिंह भगवान ने हिरण्यकश्यप को अपनी गोद में बैठा लिया और अपने बड़े–बड़े नाखून वाले पंजे से उसका पेट फाड़ डाला। इस प्रकार हिरण्यकश्यप का अन्त हुआ और प्रहलाद के भक्ति की जीत हुई। सच ही कहा गया है।

जाको राखे साँइया, मार सके न कोय।

किशोर के गले में खाना अटका

हर वर्ष होली के दूसरे दिन गांव में सहभोज, होता था। हमेशा की तरह आज भी सहभोज था। कुछ लोग खाना खा रहे थे।

हँसी मजाक चल रहा था।

इतने में मोहन के बड़े भाई किशोर के गले में भोजन का कोई टुकड़ा अटक गया। उसका दम घुटने लगा। लोग घबरा गये।

तभी रामू ने उसे खड़ा कर लिया। और उसके पीछे खड़ा हो गया। उसकी कमर में अपनी दोनों बाहें डाल ली। उसके पेट पर (छाती से नीचे) दोनों हाथों को एक–दूसरे में फंसा कर मुठ्ठी बांध ली।

किशोर को थोड़ा आगे झुका दिया। एक झटके के साथ उसके पेट को ऊपर की ओर दबाया। इससे उसके फेफड़े की हवा बाहर निकली पर गले में अटकी चीज नहीं निकलीं।

उसने फिर से एक–दो बार झटके दिये। चौथी बार में खाने का टुकड़ा हवा के साथ बाहर आ गया। सब लोगों की जान में जान आ गई।

गांव के एक बूढ़े आदमी सुदामा ने किशोर से पूछा– "बेटे ! तुझे क्या हो गया था ?!

किशोर ने बताया में खाना खा रहा था। उतने में कोई हँसी की बात हुई। मुँह का कौर गले में फंस गया। कौर फंसते ही ऐसा लगा कि मेरी जान निकल जाएंगी।

सुदामा जी ने पूछा– "बेटा! अब कैसा लग रहा है?

किशोर बोला तो मुझे ठीक लग रहा है। अब सुदामा जी के पूछने पर रामू ने बताया कि यदि चार मिनिट तक टुकड़ा गले में अटका रह जाए, तो आदमी मर भी सकता है?

पूछा–यदि छोटे बालक के गले में और कुछ फँस जाए, तब भी क्या ऐसा ही करना चाहिए?

रामू ने कहा– "नहीं, उसे टखने से पकड़कर उल्टा लटका दें। उसका मुँह खोलकर जीभ बाहर निकाले। और चीजों को गिरने दें।'

रामू ने आगे बताया कि "यदि आदमी मोटा हो तो उसे पीठ के बल जमीन पर लिटा दें। उसके घुटनों के अलग–ब्रगल घुटनों के बल बैठ जाएँ।

दोनों हाथों को नामि के ऊपर रखें। उसका सिर एक तरफ झुका दें। फिर अपने दोनों हाथों को ऊपर की ओर एक झटका दें।

जीभ को रूमाल या साफ कपड़े से पकड़कर बाहर खीच लें। ऐसा करने से अटकी हुई चीज निकल जाती है।

घासीदास जी ने जानना चाहा "क्या वह चीज निकलने के बाद आदमी बिल्कुल ठीक हो जाता ?

रामू ने कहा– "हाँ, पूरी तरह ठीक हो जाता है। पर कभी–कभी उसे सांस लेने में कठिनाई होती है। ऐसे समय उसे मुँह से नकली सांस देना चाहिए।"

रामू ने कहा जिस आदमी को नकली सांस देना है। उसको पीठ के बल लिटा दो। तुम उसके सिर की ओर बैठ जाओ। उसके सिर को पीछे की ओर मोड़ दो। उसका मुँह खोल दो।

अंगुलियों से उसकी नाक बंद कर दो। अपना मुँह उसके मुँह पर रख दो। फिर पूरी ताकत से उसके मुँह में फूँक मारो। इससे उसका सीना फूल जाएगा।"

घासीदास ने पूछा– "उसके बाद क्या करना चाहिए?"

रामू ने कहा– अपना मुँह थोड़ी देर के लिए

हटा दो। जिससे भीतर की हवा बाहर निकल जाए। फिर मुँह पर मुँह रखकर फूंक मारो।

ऐसा एक मिनिट में 15 से 17 बार दोहराना चाहिए। छोटे बालकों के मामले में एक मिनिट में बीस से पच्चीस बार करना चाहिए।"

घासीदास ने पूछा– "ऐसा कब तक करना चाहिए ?'

रामू ने बताया जब तक आदमी अपने आप सांस न लेने लगे। इसमें एक घंटे का समय भी लग सकता है। इस तरह मुँह से सांस देने को नकली सांस कहते हैं।"

घासीदास जी ने पूछा– "क्या उसे डॉक्टर को भी दिखाना चाहिए?"

रामू ने कहा– "डॉक्टर को एक बार दिखा देना ठीक रहता है।

जब तक सफलता न मिल जाए, तब तक हार नहीं माननी चाहिए

जो लोग सफलता पाना चाहते हैं, उन्हें अंतिम पल तक हिम्मत नहीं हारना चाहिए। जिस पल हम हार मान लेते हैं, उसी समय हम असफल हो जाते हैं। ये बात एक लोक कथा से समझ सकते हैं।

कथा के अनुसार पुराने समय में एक राजा युद्ध में हार गया था। उसके सभी सैनिक मारे जा चुके थे। राजा किसी तरह अपनी जान बचाकर जंगल में भाग गया। सैनिक उसका पीछा कर रहे थे। वह बचने के लिए एक गुफा में छिप गया।

सैनिक राजा को जंगल में खोजते–खोजते उस गुफा तक पहुंच गए। गुफा के अंदर राजा को ढूंढा, लेकिन सैनिक उसे ढूंढ नहीं सके। बाहर आकर सैनिकों ने बड़े–बड़े पत्थरों से गुफा बंद कर दी। गुफा बहुत गहरी थी। अंदर की ओर राजा छिपा हुआ था। वह काफी थक चुका था। भूख–प्यास की वजह से बेहाल हो रहा था। उसके शरीर में ताकत भी नहीं बची थी।

शत्रु सैनिक गुफा बंद करके वहां से चले गए तो राजा अंदर बैठा–बैठा सोच रहा था कि अब तो उसका जीवन खत्म हो गया। वह गुफा से कभी बाहर नहीं निकल पाएगा। राजा निराश हो चुका था। तभी उसे मां की एक बात याद आई। उसकी मां कहती थी कि कुछ तो कर, यूं ही मत मर। ये बात याद आते ही राजा में फिर से ऊर्जा आ गई। उसने सोचा कि कोशिश किए बिना हार नहीं मानना चाहिए।

राजा गुफा के द्वार से पत्थरों को हटाने का काम शुरू कर दिया। कड़ी मेहनत के बाद राजा ने बड़े–बड़े पत्थर खिसका दिए। किसी तरह राजा ने बाहर निकलने की थोड़ी सी जगह बना ली थी। राजा गुफा से बाहर निकला और अपने मित्र राजा के पास पहुंच गया। मित्र राजाओं की मदद से उसने शत्रुओं को पराजित कर दिया और अपना राज्य वापस प्राप्त कर लिया।

सीख :- इस कथा की सीख यही है कि हमें सफलता मिलने तक हार नहीं मानना चाहिए। जिस पल हम हार मान लेते हैं, उसी समय असफल हो जाते हैं।

बालकोना

(बुद्धि परीक्षण)

हमारे मान बिन्दु

1. जहाँ मूर्ति रूप में भगवान् प्रतिष्ठित रहते हैं तथा जहाँ हम पूजा करते हैं, उस स्थान को क्या कहते हैं? **(देवालय / मन्दिर)**
2. मन्दिर में किसके सम्मुख पहुँचने पर अनायास ही हमारे दोनों हाथ प्रणाम करने को उठ जाते हैं? **(देवमूर्ति)**
3. सृष्टिकर्ता, पालक एवं संहारक (त्रिमूर्ति) के रूप में किन देवताओं का स्मरण किया जाता है? **(ब्रह्मा, विष्णु, महेश)**
4. किन ग्रंथों के अध्ययन से जीवन के आदशों की शिक्षा मिलती है? **(धर्म ग्रंथों के)**
5. गाय को हम माता क्यों मानते हैं?
   (गाय का दूध माँ के दूध के समान अमृत तुल्य एवं शिशु के लिए पोषक है और गाय का दूध सम्पूर्ण आहार माना जाता है "गावो विश्वस्य मातरः" अर्थात् गाय चराचर जगत की माता है।)
6. किस नदी का जल इतना शुद्ध एवं पवित्र है कि वर्षों तक रखने पर भी दूषित नहीं होता? **(गंगा)**
7. "अक्षयवट" वृक्ष किस नगर में स्थित है? उस पवित्र स्थान का क्या नाम है? **(तीर्थराज प्रयाग)**
8. घर के आँगन में कौन–सा पौधा हमें पवित्रता का दर्शन कराता है तथा जिसके पत्ते कई रोगों में औषधि का काम करते हैं? **(तुलसी का पौधा)**
9. देव–पूजा के समय कौन से वाद्य बजाए जाते हैं? **(शंख–घण्टा)**
10. "ग" अक्षर से प्रारम्भ होने वाले हिन्दू संस्कृति के पाँच प्रमुख मानबिन्दु एवं. आस्था के प्रतीक कौन से हैं?
    (1. गौ, 2. गंगा, 3. गीता, 4. गायत्री, 5. गणेश)
11. सिक्खों का पवित्र ग्रंथ कौन–सा है? **(श्री गुरुग्रंथ साहिब)**

इन्हें भी जाने

1. **अमरनाथ**–यहाँ भगवान् शंकर का हिमलिंग प्रतिवर्ष स्वतः निर्मित होता है। यह स्थान जम्मू–कश्मीर प्रदेश में स्थित है।

2. **केदारनाथ**–हिमालय में प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग जो छः मास बर्फ से ढका रहता है। यहाँ भगवान शिव की उपासना होती है। यह उत्तराखण्ड में है।

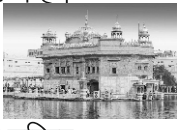

3. **अमृतसर**–पंजाब स्थित इस नगर में पवित्र तीर्थ हरमंदर साहिब, जलियांवाला बाग एवं दुर्ग्यांना मंदिर स्थित है।

4. **सोमनाथ**–गुजरात प्रदेश में स्थित इतिहास प्रसिद्ध भगवान् शिव का मन्दिर, जो 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

गतिविधियाँ

झाँसी मे मातृ परिषद का गठन

आज सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इण्टर कालेज सदर बाजार झाँसी मे मातृ परिषद का गठन हुआ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रबिन्धका श्रीमती ऊषा अग्रवाल जी एवं विशिष्ट अतिथि डाक्टर कुसुम गुप्ता जी एवं श्रीमती हेमलता कुशवाहा जी रही उपस्थित अतिथियो का स्वागत परिचय विद्यालय की प्रधानाचार्या जी ने कराया दीप प्रज्वलन वन्दना के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ प्रधानाचार्या श्रीमती अर्चना अवस्थी ने मातृ परिषद के गठन के महत्व को समझाया उन्होने बताया कि विद्या भारती के विद्यालयो मे सभी के सहयोग से एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण किया जाता है विद्यालय के विकास मे सभी का महत्वपूर्ण स्थान है बालिकाओ के विकास मे माता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए माता का स्थान श्रेष्ठ है इस अवसर पर सत्र 2024–25 के लिए मातृ परिषद का गठन किया गया जिसमे सर्व सम्मति से अध्यक्ष पद पर श्रीमती गीतिका अग्रवाल जी का चयन किया गया साथ ही अन्य पदाधिकारीयो का चयन किया गया जिसमे उपाध्यक्ष श्रीमती निमिषा गुप्ता मंत्री पद पर श्रीमती अवंतिका अग्रवाल जी सह मंत्री श्रीमती शिवांगी मिश्रा कोषाध्यक्ष श्रीमती इन्द्रा गुप्ता जी पूर्व प्रधानाचार्या (कृष्ण चंद्र शर्मा इं. का.) झाँसी कार्यक्रम मंत्री श्रीमती दीपा स्वामी प्रचार मंत्री श्रीमती दीपिका वैद्य का चयन किया गया

मुख्य अतिथि ने चयनित पदाधिकारीयो को माला पहनाकर सम्मानित किया एवं शपथ दिलाई सभी पदाधिकारीयो ने विद्यालय विकास मे महत्वपूर्ण सुझाव दिये इस अवसर पर माता अभिभावक उपस्थित रही सभी का आभार प्रकट प्रधानाचार्य श्रीमती अर्चना अवस्थी जी ने किया।

क्षेत्रीय बैठक सम्पन्न

दिनांक 6 मई 2024 को सरस्वती कुंज निरालानगर, लखनऊ में प्रान्तीय प्रशिक्षण प्रमुख एवं प्रदेश निरीक्षक की बैठक मा. क्षेत्रीय संगठन मंत्री हेमचन्द्र जी व क्षेत्रीय मंत्री आ. जे. पी. सिंह के नेतृत्व में पूर्ण हुई। ग्रीष्म काल में लगने वाले नवीन प्रधानाचार्य, नवीन आचार्य के वर्गो के लिए पाठ्यक्रम एवं दिनचर्या पर विचार किया गया। प्रत्येक आचार्य का प्रशिक्षण हो सके, जो शिक्षण में सहायक सामग्री का उपभोग, सहायक सामग्री निर्माण कार्यशाला का आयोजन हो। नवीन प्रधानाचार्य व्यक्तिगत विकास वर्ग क्षेत्र स्तर लगेगा। नवीन आचार्य तथा प्रधानाचार्य वर्ग प्रान्त स्तर पर होंगे। सभी प्रदेश निरीक्षकों ने नियोजन पर वृत प्रस्तुत किया। दिनेश कुमार सिंह एवं कमलेश सिंह, उमाशंकर मिश्र, राजेन्द्र बाबू जी की सहभागिता रही।

श्रद्धंजलि सभा

आज दिनांक 08–05–2024, दिन बुधवार को विद्या भारती विद्यालय सनातन धर्म सरस्वती शिशु मंदिर/शिशु वाटिका मिश्राना, लखीमपुर खीरी में श्री सनातन धर्म सभा के अध्यक्ष स्व० सतीश कौशल बाजपेई (डॉ० मौनी) के आकस्मिक निधन पर शिशु मंदिर/शिशु वाटिका परिवार द्वारा एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री मुनेंद्र दत्त शुक्ल ने बताया कि डॉ० मौनी मूलतः सीतापुर जनपद के ब्रह्मावली गांव के मूल निवासी थे। आप बड़े ही सरल व्यक्तित्व के धनी एवं संघ के समर्पित कार्यकर्ता थे। आप भारतीय जनता पार्टी के तीन बार नगर अध्यक्ष भी रहे। आप सन् 1888 से 1993 तक सनातन धर्म सरस्वती शिशु मंदिर के अध्यक्ष भी रहे। कार्यक्रम में उपस्थित शिशु

मंदिर के उपाध्यक्ष श्री जितेंद्र साहनी, कोषाध्यक्ष श्री अमित कुमार गुप्ता एवं सनातन धर्म सभा के सदस्य श्री रवि गोयल ने भी डॉ० साहब के जीवन संस्मरण रखते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर प्रधानाचार्य, संचालिका, समस्त आचार्य परिवार एवं कर्मचारियों ने भी उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

आहार एवं स्वास्थ्य बोध परिषद

सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इण्टर कालेज बॉदा मे अप्रैल माह मे आहार एवं स्वास्थ्य बोध परिषद के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों की योजना बनाकर कार्यक्रम को क्रियान्वित किया गया।

1– दिनांक 09.04.2024 से 16.04.2024 तक नौ दुर्गा के अवसर पर स्वास्थ्य के लिए उपवास का महत्व एवं ऋतु परिवर्तन पर हमारा आहार कैसा हो, जिससे हम स्वस्थ्य रहे इसके बारे मे छात्राओ एवं आचार्याओं द्वारा वन्दना सत्र मे प्रस्तुति दी गयी।

2–संचारी रोग नियन्त्रण जागरूकता के अन्तर्गत छात्राओं को शपथ दिलाई गई तथा विभिन्न संचारी रोग के लक्षण कारण एवं रोकथाम के उपाय बताए गए।

3– भारतीय आहार की वैज्ञानिकता विषय पर बहन वैष्णवी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

4– रसोईघर एक औषधालय पर छात्राओ ने विभिन्न मसालो के औषधीय गुणों के बारे में लेख प्रस्तुत किए।

5– 09 मई 2024 को मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें चिकित्सकों द्वारा मानसिक रोगों की जानकारी दी गई तथा मानसिक स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराई गई। सटीक उत्तर देने वाली छात्राओं को पुरूस्कृत किया गया, जिसकी एक झलक प्रस्तुत है।

मेघावी छात्रों का सम्मान

'रानी रेवती देवी में बोर्ड परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं का सम्मान किया गयां। 'विद्वान एवं समर्पित शिक्षक ही विद्यार्थी को उसका लक्ष्य एवं ज्ञान दे सकता है –डॉक्टर कृष्णपाल सिंह' 'जीवन में सबसे अधिक महत्व स्वयं की प्राप्त शिक्षा का विस्तार है –दीपक अग्रवाल' विद्या भारती से संबद्ध काशी प्रांत के रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज राजापुर, प्रयागराज में प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे के मार्गदर्शन में इंटरमीडिएट एवं हाई स्कूल की बोर्ड परीक्षा में विद्यालय में टॉप 10 स्थान एवं 80 प्रतिषत से ऊपर अंक पाने वाले छात्र–छात्राओं को विद्यालय एवं ऋषि लाल सामाजिक उत्थान संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से स्मृति चिन्ह, प्रमाणपत्र, माल्यार्पण एवं पेन प्रदान करके सम्मानित किया गया।

अपने उद्‌बोधन में मुख्य अतिथि डॉ कृष्णपाल सिंह ने कहा कि विद्वान एवं समर्पित शिक्षक ही विद्यार्थी को उसका लक्ष्य एवं ज्ञान दे सकता है, जितना ज्ञान विद्यार्थी अर्जित करता है उससे अधिक ज्ञानार्जन की आवश्यकता शिक्षक को भी होनी चाहिए शिक्षक को अपने ज्ञान में हमेशा बढ़ोतरी एवं नवीन पद्धति को अपनाना चाहिए अगर विद्यालय एवं घर का वातावरण ज्ञान प्राप्ति के लिए उत्तम है तो छात्र को अपना शत प्रतिशत देने हेतु कठिन परिश्रम करना चाहिए जिससे निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति हो सके।

अध्यक्ष के रूप में अपने उद्‌बोधन में दीपक अग्रवाल ने कहा कि जीवन में सबसे अधिक महत्व स्वयं की प्राप्त शिक्षा का विस्तार है, समस्त जानकारी को आपस में सदैव साझा करना चाहिये। सदैव समय का सदुपयोग अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में लगाना चाहिये,जिससे लक्ष्य की प्राप्ति अत्याधिक सरल हो जाती है। आप सभी छात्र–छात्राओं को आपस में मिलकर एक पुस्तकालय की स्थापना करनी चाहिये ताकि समस्त छात्र–छात्राओं को ज्ञान अर्जित करने का अवसर प्राप्त हो सके।

आए हुए अतिथियों का स्वागत , सम्मान एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे ने तथा संचालन सत्य प्रकाश पांडे एवं दिनेश शुक्ला ने किया।

हमारे मेधावी छात्र-छात्राएं

UPHIN-11403

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026
प्रेषण डाकघर-रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि- 5,6,7,8

हमारे होनहार छात्र-छात्राएं

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स-22, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ- 226020, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।

प्रकाशन तिथि : 01:05:2024